I SEM BCA

# कविता में घर

## नंदकिशोर आचार्य

कविता में घर नन्दकिशोर जी द्वारा लिखित एक रचना है। जिसमें लेखक ने भवानी प्रसाद मिश्र जी की कविताओं व विचारों के बारे में बताया है। चिति पत्रिका के सिलसिले में पहले भी भवानी जी से पत्राचार हो चुका था उन्होंने उस पत्रिका के लिए दो कविताएँ भी भेजी थी। लेकिन अब तक उनसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिला था। जब एवरीमेंस पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ तब लेखक भवानी जी का साक्षात्कार लेने के लिए गये। भवानी जी एक गाँधीवादी लेखक थे। उनका कहना था कि कविता मन की भावनाओं को बताने का साधन है जब किसी बात को जनता तक पहुँचाना हो तो कविता सबसे अच्छा माध्यम है। उनका कविताओं में पहले से कुछ भी सोचा हुआ या लिखा हुआ नहीं था। उनका कहना है कि सच्चा कवि वहीं होता है जो कुछ लिखे तो शब्द अपने आप जुड़ते चले जाए।

भवानी जी में बोलचाल के शब्दों को भी कविता में बदल देने की शक्ति है। समाज की बुराइयों, अच्छाई, कमी आदि को कविता के माध्यम से जनता तक पहुँचा सकते हैं। नाटक, कहानी, लेख आदि को भी वह कविता के रुप में बताकर उसे प्रभावशाली बना देते हैं। कठिन से कठिन परिस्थिती को भी कविता के माध्यम से सरल व सुगम बनाया जा सकता है।

लेखक कहता है कि भवानी जी इतने सरल हैं कि उनकी कविताओं की गहराई को समझना मुश्किल है। उनकी कविताओं को बहुत सावधानी से पढ़ने की आवश्यकता है। उनकी कविताओं में कुछ भी छिपा हुआ नहीं है। इनकी एक कविता का अर्थ है कि वह खुशी से अर्थात् मन से बार-बार आग्रह करते हैं कि वह इनके पास से न जाए परन्तु इनका मन बार-बार संसार में जाकर लोगों के दुखों को जानना चाहता है।

भवानी जी की कविताओं को पढ़ने से अपनापन महसूस होता है। उनकी कविताओं में ग्रामीण परिवेश भी दिखाई देता है। उनकी कविताओं में परिवार, घर बराबर मौजूद रहता है। जैसे वह अपनी कविताओं में यदि एक घर के बारे में बता रहे है तो घर के सामने के पहाड़ का भी इतनी सुंदरता से वर्णन करते हैं कि ऐसा लगता है कि वह पहाड़ भी घर का ही हिस्सा लगने लगता है। जिससे अलग होना मुश्किल है।

उम्र के अंतिम पड़ाव में वह अपनी कविता के माध्यम से कहना चाहते हैं कि हे जिन्दगी जीवन की परेशानियों से मेरा मन इतना थक चुका है कि अब अचानक से मिली खुशी बर्दाश्त नहीं होता। भवानी जी ने अपनी कविताओं में उम्र के एक दौर में प्रेम की अनुभूति के बारे में लिखा है कि इस समय व्यक्ति को केवल प्रेम, सहारे व अपनेपन की आवश्यकता होती है। जब भी उनकी कविताओं में घृणा, नफरत, क्रोध दिखाई देता है उसमें भी अपनों के प्रति प्रेम छिपा हुआ होता है।

भवानी जी की कविता ही इनका जीवन है। इनकी कविताओं में विद्रोह है, अपनापन है, दर्द है, आत्मियता है, समाज के प्रति व्यंग है। यदि कहा जाए तो भवानी जी की कविता में घर है।

### विशेषता

- इन्होंने कविता से होने वाले आत्मिक आनंद का चित्रण किया है।

- इनका कहना है कि कविता के लिए अध्ययन की आवश्यकता नहीं होती। अपनी बात कहने के लिए कविता एक मुख्य हथियार है।
- एक कल्पनाशील व भावुक हद्रय वाला ही सच्चा कवि बन सकता है।
- लेखक के प्रकृति प्रेमी होने का परिचय मिलता है।
- प्रेम ही संसार को एक सूत्र में बाँधकर रख सकता है।

---

## आदर्श कुक्कुट गृह

इस पाठ के लेखक का नाम मार्कण्डेय जी है। उन्होंने इस पाठ में भ्रष्टाचारी नेताओं की पोल खोली है कि किस तरह वे गरीब व भोली भाली जनता को बहला-फुसलाकर, मूर्ख बनाकर अपना काम निकालते हैं।

### आरंभ

गाँव में एक नया सरकारी अधिकारी आता है। वह गाँव वालों की भलाई के लिए गाँव में विकास खंड खोलना चाहता है। उस गाँव में अधिकतर व्यक्तियों का जीविकोपार्जन का जरिया मुर्गे व मुर्गियाँ है इसलिए वह वहाँ एक आदर्श कुक्कुट गृह खोलना चाहता है। इस काम के लिए वह उसी गाँव के एक व्यक्ति जिसका नाम बसावन है उसे चुनता है। वह बसावन से कहता है कि वह घर-घर जाकर गाँव वालों को विकास खंड के महत्व के बारे में बताए। वह घर-घर जाकर कहता है कि अपनी मुर्गियों को कुक्कुट गृह में डाल दो। जितने अंडे होंगे उसके हिसाब से सरकार उन्हें अच्छे दाम देगी। सभी लोग अपनी मुर्गियाँ देने को तैयार हो जाते हैं।

### मध्य

बसावन रमजान नाम के एक व्यक्ति के पास जाता है। रमजान के पास एक मुर्गी व चार मुर्गे हैं। वह उदास हो जाता है तब बसावन कहता है कि मुर्गे पर भी बराबर का हिस्सा मिलेगा और तुम्हारे मुर्गे तो बहुत ही ताकतवर व अच्छे हैं। रमजान खुश हो जाता है और अमीर होने के सपने देखने लगता है।

दो दिनों के बाद ही कुक्कुट गृह के उद्घाटन के लिए समय निश्चित किया जाता है। एक दिन तो पत्र आने में निकल जाता है अब केवल एक दिन का ही समय था। उद्घाटन के लिए ठाकुर के सामने वाली जमीन को साफ किया जाता है। जल्दी से वहाँ पर एक बाड़ा बनाया जाता है। प्राइमरी स्कूर के अध्यापक बच्चों को फाटक सजाने तथा स्वागत गान के लिए तैयार कर रहे थे। समय पर सारा काम हो जाता है। अचानक से पता चलता है कि दरबों में एक भी मुर्गी नहीं थी। बसावन अपने आदमियों के साथ मिलकर मुर्गियों को इकट्ठा करता है।

उद्घाटन का समय हो जाता है। सभी लोग तैयार होकर कलक्टर साहब का इंतजार करने लगते हैं। सभी गाँव वालों में बहुत उत्साह था। उसी समय कलक्टर साहब आते हैं फूल-मालाओं व स्वागत-गान से उनका स्वागत किया जाता है। अपने भाषण में कलक्टर साहब गाँव वालों को बड़े-बड़े सपने दिखाते हैं और विकास खंड का महत्व बताते हुए कहते हैं कि इस योजना से तुम्हारा गाँव जल्दी ही शहर बन जाएगा।

<u>अन्त</u>

उदघाटन समारोह समाप्त होने पर सारे अफसर पार्टी में बैठ जाते हैं। पार्टी समाप्त होने पर कलक्टर साहब का चपरासी अधिकारी के पास आकर कहता है कि साहब की पत्नी को मुर्गे का गोश्त बहुत पसंद है। अधिकारी रमजान का मुर्गा पकड़कर उसे दे देता है। धीरे-धीरे और भी अधिकारी अफसर मुर्गे की माँग करने लगते हैं। सारा कुक्कुट गृह खाली हो जाता है। गाँव वालों के हाथ कुछ भी नहीं लगता और आगे इसकी उम्मीद भी नहीं थी क्योंकि सरकार की तरफ से से तो कुक्कुट गृह की स्थापना हो चुकी थी। गाँव वाले बस सपने देखते रह जाते हैं।

## <u>विशेषता</u>

इस पाठ में लेखक ने देश के नेताओं पर जोरदार व्यंग किया है। जो भोली भाली जनता को बहला-फुसलाकर मूर्ख बनाकर अपना काम निकालते हैं। यह भारत देश के हर पीड़ित व्यक्ति की कहानी है। यहाँ लेखक भ्रष्टाचार के अद्भुत चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है। यह पाठ सरल भाषा में लिखा गया है। कहीं-कहीं मुहावरों का प्रयोग किया गया है। लेखक बताना चाहता है कि किस तरह से आज भी गरीबों का शोषण किया जाता है।

---

# सयानी बुआ

**प्रश्न-उत्तर**

(1) सयानी बुआ पाठ की लेखिका नाम क्या है ? (मन्नू भंडारी )

(2) बुआ जी किसकी पाबंद थी ? (समय )

(3) घर का सारा कार्य किस व्यवस्था से होता था ? ( मशीनी )

(4) बुआ जी की एक-एक बात को कौन उदाहरण के रुप में सामने रखता था ? (लेखिका के पिताजी )

(5) लेखिका को आगे की पढ़ाई के लिए कहाँ जाने का प्रस्ताव आया ? (बुआ जी के पास)

(6) लेखिका ने किसका नाम गुहारते हुए घर से विदा ली ? ( भगवान )

(7) बुआ जी की बेटी का नाम क्या है ? ( अन्नू )

(8) बुआ जी के घर का वातावरण कैसा था ? ( नीरस व यंत्रचालित )

(9) डाक्टर ने क्या सलाह दी ? ( अन्नू को कुछ समय के लिए पहाड़ पर ले जाया जाए )

(10) नौकर से क्या टूट गया ? ( सुराही )

(11) बुआ जी को किस बात पर गर्व था ? ( अपनी सुव्यवस्था पर )

(12) बुआ जी के पति को लेखिका क्या कहकर बुलाती है ? ( भाईसाहब )

(13) बुआ जी ने स्वप्न में क्या देखा ? ( कि भाईसाहब अकेले चले आ रहे हैं उनके साथ अन्नू नहीं है )

(14) बुआ जी रोते-रोते क्यों हँस पड़ी ? ( अन्नू की कुशलता का समाचार सुनकर )

## विशेषता

मन्नू भंडारी की कहानियाँ हो या उपन्यास उनकी भाषा सरल व पाठकों को आकर्षित करती है। उनकी रचनाओं में स्त्री मन से जुड़ी भावनाएँ देखी जा सकती हैं। इस रचना में मन्नू जी ने उन घटनाओं के बारे में लिखा है जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लेखिका ने बड़ी खूबसूरती से एक साधारण लड़की को असाधारण बनने के पड़ावो को प्रकट किया है। इस रचना में मन्नू जी का उत्साह व देशप्रेम देखते ही बनता है।

# प्रायश्चित

## रामू की बहू

रामू की पत्नी प्रायश्चित कहानी की मुख्य पात्र है। उसकी उम्र चौदह वर्ष की है। उसके विवाह को दो महीने हुए है। विवाह के तुरंत बाद ही सासू माँ ने सारे घर की जिम्मेदारी उसे सौंप दी। घर में एक कबरी बिल्ली रहती थी। उम्र कम होने के कारण रामू की पत्नी को जिम्मेदारियाँ निभाने में मुश्किल होती है। कभी वह कभी-छ खुला रसोईघर ोड़ देती है। जिसकी वजह से बिल्ली रसोईघर का सारा दूध घी चट कर जाती। रामू की पत्नी बिल्ली से बहुत परेशान हो जाती है। उसने कबरी बिल्ली को पकड़ने की योजना बनाई। उसने कटघरा मंगवाकर

उसमें दूधआयी। नहीं में झाँसे उसके बिल्ली कबरी लेकिन रखा। मलाई- उसकी योजना असफल हो गयी। एक दिन रामू की पत्नी ने रामू के लिए खीर बनाई और बिल्ली के डर से उसे स्थान पर रख दिया। परंतु कबरी बिल्ली ने छलाँग लगाकर उस बरतन को नीचे गिरा दिया और खीर खाने लगी। रामू की पत्नी परेशान होकर कबरी बिल्ली को मारने की योजना बना ली। अगले दिन रामू की पत्नी ने देखा कि कबरी बिल्ली दरवाजे के पास बैठी है। रामू की पत्नी ने वहाँ कटोरे में दूध भरकर रख दिया। कबरी ने जैसे ही दूध पिया रामू की पत्नी ने उसके सिर पर लकड़ी का पाटा मार दिया। पाटा लगते ही बिल्ली गिर पड़ी। यह बात सभी जगह फैल गयी। सभी रामू की पत्नी को दोष देने लगे। पंडित परमसुख को बुलाया जाता है हत्या की बिल्ली कि हैं कहते पंडित , बताते विधान खर्चीला और लम्बा जी पंडित लिए के पाने छुटकारा से नरक मिलेगा। नरक कुम्भीपाक पर करने चलत पता तभी लेकिन हैं।ाहै कि बिल्ली तो उठकर भाग गयी।

**I SEMESTER BCA**

**Uma chaudhary**